विकसित भारत अभियान
1947 TO 2047
NAAC
सप्तम
दीक्षांत समारोह
कृष्ण चतुर्दशी, आश्विन माह, विक्रम, सम्बत् 2081
मंगलवार, 1 अक्टूबर, 2024
समय - प्रात: 11:00 बजे
स्थान : कुशाभाऊ ठाकरे सभागार, भोपाल, मध्यप्रदेश
मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल
(नैक द्वारा 'A' ग्रेड प्रदत्त)

सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान् मा प्रमदः।
मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव।
यान्यनवद्यानि कर्माणि। तानि सेवितव्यानि। नो इतराणि।
यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि। नो इतराणि।
एष आदेशः। एष उपदेशः। एतदनुशासनम्। एवमुपासितव्यम्।

"Speak the truth. Abide by your dharma.
Never be idle in your studies.
Know your mother to be like a goddess, Know your father to be like a god,
Know your teacher to be like a god, Know a guest to be like a god"
O disciples! Only do those actions which are in accordance with the shastras and society.
Do not perform actions that oppose this.
Moreover, only adopt our good conduct, nothing else.
This is our final command, This is the teaching. Go forth, live according to this."

(Honoris Causa) मानद उपाधि अलंकृत

पद्म विभूषण डॉ. अनिल काकोडकर
कुलाधिपति
होमी भाभा राष्ट्रीय संस्थान, मुंबई

पद्मश्री डॉ. अशोक झुनझुनवाला
संस्थान प्रोफेसर
आईआईटी चेन्नई

डॉ. आतिश श्रीपाद दाभोलकर
निदेशक, आईसीटीपी, ट्राइस्टे, इटली
सहायक महानिदेशक, यूनेस्को

डॉ. जतिंदर वीर यख्मी
पूर्व एसोसिएट, निदेशक
भौतिकी समूह, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (बीएआरसी), मुंबई

प्रोफेसर नागेश्वर राव
पूर्व कुलपति
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

डॉ. ओम प्रकाश शर्मा
वरिष्ठ सलाहकार एवं प्रमुख, जराचिकित्सा
इंद्रप्रस्थ अपोलो अस्पताल, नई दिल्ली

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय,भोपाल

कुलगुरू, प्रबंध मण्डल, विद्या परिषद के सदस्य एवं विश्वविद्यालय परिवार

दीक्षांत समारोह

1 अक्टूबर, 2024

के अवसर पर
आपको सादर आमंत्रित करते हैं।

माननीय श्री मंगुभाई पटेल
मध्यप्रदेश के राज्यपाल एवं कुलाधिपति, मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय
समारोह की अध्यक्षता करेंगे।

माननीय डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश शासन
समारोह के मुख्य अतिथि होंगे।

माननीय श्री इंदर सिंह परमार
मंत्री उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष विभाग, मध्यप्रदेश शासन
समारोह के विशिष्ट अतिथि होंगे।

पद्मविभूषण डॉ. अनिल काकोडकर
समारोह के सारस्वत अतिथि होंगे एवं
दीक्षांत उद्बोधन देंगे।

प्रो. (डॉ.) संजय तिवारी
कुलगुरू
मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल

डॉ. सुशील मंडेरिया
कुलसचिव
मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल ने आज अपने 34वें स्थापना दिवस एवं सप्तम दीक्षांत समारोह का आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न किया। कार्यक्रम का आयोजन कुशाभाऊ ठाकरे अंतर्राष्ट्रीय सभागार (मिंटो हॉल) में किया गया। सप्तम दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता मध्य प्रदेश के राज्यपाल एवं कुलाधिपति मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय श्री मंगू भाई पटेल द्वारा की गई। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री इंदर सिंह परमार मंत्री उच्च शिक्षा तकनीकी शिक्षा एवं आयुष विभाग मध्य प्रदेश शासन उपस्थित रहे।

भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के सप्तम दीक्षांत समारोह में सारस्वत अतिथि के रूप में प्रसिद्ध परमाणु वैज्ञानिक पद्म विभूषण श्री अनिल काकोडकर उपस्थित रहे साथ ही उनके द्वारा दीक्षांत उद्बोधन दिया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय द्वारा 6 प्रसिद्ध विद्वानों को मानद उपाधि से नवाजा गया।

इस कड़ी में सर्वप्रथम पद्म विभूषण, परमाणु वैज्ञानिक डॉ. अनिल काकोडकर को उनके विज्ञान क्षेत्र मे उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए डॉक्टर ऑफ़ साइंस की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया।

डॉ. अनिल काकोडकर भारत के एक प्रमुख परमाणु वैज्ञानिक और इंजीनियर हैं, जिनका योगदान भारत की परमाणु शक्ति और ऊर्जा के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। उनका जन्म 11 नवंबर 1943 को बड़वानी, मध्य प्रदेश में हुआ था। उन्होंने भारतीय परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष के रूप में और भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (BARC) के निदेशक के रूप में सेवाएँ दीं।

डॉ. काकोडकर ने भारत को परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। वे उन प्रमुख वैज्ञानिकों में से एक थे, जिन्होंने 1998 में पोखरण में किए गए परमाणु परीक्षणों में अहम भूमिका निभाई थी। उन्होंने शांतिपूर्ण परमाणु ऊर्जा के उपयोग और देश की ऊर्जा सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न योजनाओं पर काम किया।

उन्हें पद्म विभूषण, पद्म भूषण, और पद्म श्री जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उनके नेतृत्व में भारत ने थोरियम आधारित परमाणु ऊर्जा तकनीक में भी महत्वपूर्ण प्रगति की है।

अगला सम्मान पद्मश्री डॉ अशोक झुनझुनवाला जो की एक प्रमुख वैज्ञानिक और शिक्षाविद हैं को उनके इलेक्ट्रॉनिक और दूरसंचार के क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए डॉक्टर ऑफ़ लेटर्स की मानद उपाधि से अलंकृत किया गया।

डॉ.अशोक झुनझुनवाला मुख्य रूप से इलेक्ट्रॉनिक्स और दूरसंचार के क्षेत्र में अपने उल्लेखनीय योगदान के लिए जाने जाते हैं। उनका जन्म 22 जून 1953 को हुआ था और वे वर्तमान में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) मद्रास के प्रोफेसर हैं। उन्होंने भारत में दूरसंचार और इंटरनेट सेवाओं को सुलभ और किफायती बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

डॉ.झुनझुनवाला ने ग्रामीण क्षेत्रों में दूरसंचार क्रांति लाने और ग्रामीण क्षेत्रों के लिए तकनीकी समाधान विकसित करने पर जोर दिया है। वे भारत की स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा देने और युवाओं के बीच नवाचार को प्रेरित करने के लिए भी सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं। उनके नेतृत्व में, कई स्टार्टअप्स और नवाचार केंद्र स्थापित किए गए हैं जो उभरती तकनीकों पर काम कर रहे हैं।

डॉ.अशोक झुनझुनवाला को उनके कार्यों के लिए 2002 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया था। उन्होंने सस्ती इलेक्ट्रिक वाहनों और नवकरणीय ऊर्जा स्रोतों के विकास में भी प्रमुख योगदान दिया है, जिससे भारत के ऊर्जा क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहे हैं। उन्हें 'दइकोसिस्टम एनेबलर' पुरस्कार एवं बिजनेसलाइन आइकॉनिक चेंजमेकर अवॉर्ड 2024 से सम्मानित किया गया हैं।

प्रसिद्ध जेरियोट्रिक्स डॉ. ओम प्रकाश शर्मा द्वारा वृद्धावस्था संबंधी बीमारियों के इलाज में काफी महत्वपूर्ण कार्य किया है। उन्हें उनके अतुलनीय योगदान के लिए डॉ. ऑफ लेटर्स की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया।

डॉ.ओमप्रकाश शर्मा अपोलो अस्पताल में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। जेरियाट्रिक्स चिकित्सा की वह शाखा है, जो विशेष रूप से बुजुर्गों की देखभाल, उनके स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों, और वृद्धावस्था में उत्पन्न होने वाली बीमारियों के उपचार पर केंद्रित होती है।

डॉ.शर्मा ने बुजुर्ग रोगियों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने और उनमें उम्र से संबंधित समस्याओं का निदान और उपचार करने में विशेष योग्यता प्राप्त की है। उनकी विशेषज्ञता में डिमेंशिया, अल्जाइमर, पार्किंसन, और अन्य वृद्धावस्था संबंधी बीमारियों का इलाज शामिल है।

अपोलो अस्पताल में अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने न केवल रोगियों के इलाज में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, बल्कि वृद्धावस्था चिकित्सा के क्षेत्र में नए अनुसंधानों और नवाचारों को भी बढ़ावा दिया है। उनकी देखरेख में बुजुर्ग रोगियों को समर्पित, व्यक्तिगत और सहानुभूतिपूर्ण देखभाल प्राप्त होती है, जो उनकी जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाने में सहायक है।

डॉ.ओमप्रकाश शर्मा को उनके काम के लिए व्यापक मान्यता प्राप्त है और वे बुजुर्ग चिकित्सा के क्षेत्र में एक अग्रणी नाम हैं।

डॉ. नागेश्वर राव पूर्व कुलपति इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली को उनके दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान और उल्लेखनीय प्रयासों के लिए डॉक्टर ऑफ़ डिस्टेंस एजुकेशन की मानद उपाधि से नवाजा गया।

डॉ. राव वे उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद् और प्रशासक हैं, जिन्होंने भारत में दूरस्थ शिक्षा और मुक्त शिक्षा प्रणाली को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके नेतृत्व में, इग्नू ने डिजिटल लर्निंग, ई-लर्निंग प्लेटफार्म, और दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से उच्च शिक्षा को सुलभ और व्यापक बनाने के कई नए पहल किए।

डॉ.नागेश्वर राव ने अपनी शैक्षणिक यात्रा के दौरान कई महत्वपूर्ण शैक्षिक पदों पर कार्य किया है। वे उत्तरप्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज के कुलपति भी रह चुके है। उन्होंने न केवल इग्नू के संचालन को सुदृढ़ किया, बल्कि गुणवत्ता-आधारित शिक्षा और शोध को बढ़ावा देने के लिए नई नीतियों को भी लागू किया। उनके प्रयासों से इग्नू ने बड़ी संख्या में छात्रों को उनकी सुविधा के अनुसार शिक्षा प्राप्त करने के अवसर प्रदान किए हैं।

डॉ.राव ने कई शोध पत्र और लेख प्रकाशित किए हैं और उच्च शिक्षा, प्रबंधन और दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उन्हें विभिन्न मंचों पर सम्मानित भी किया गया है। उनका समर्पण और नेतृत्व इग्नू को विश्व स्तर पर एक अग्रणी मुक्त विश्वविद्यालय के रूप में स्थापित करने में सहायक रहा है।

इसी तारतम्य में अगली उपाधि प्रसिद्ध भौतिक वैज्ञानिक डॉ. अतिश दाभोलकर को उनके सैद्धांतिक भौतिकी के क्षेत्र अतुलनीय योगदान के लिए डॉक्टर ऑफ़ साइंस की मानद उपाधि से विभूषित किया गया।

डॉ.अतिश दाभोलकर एक विश्वप्रसिद्ध भारतीय सैद्धांतिक भौतिक विज्ञानी हैं, जो स्ट्रिंग थ्योरी, क्वांटम ग्रेविटी और ब्लैक होल फिजिक्स के क्षेत्र में अपने उल्लेखनीय कार्य के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने उच्च ऊर्जा भौतिकी और ब्रह्मांड विज्ञान के क्षेत्र में अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डॉ. दाभोलकर वर्तमान में अंतर्राष्ट्रीय सैद्धांतिक भौतिकी केंद्र (ICTP), ट्राइस्टे, इटली के निदेशक हैं।

उनकी शिक्षा का प्रारंभिक चरण मुंबई में हुआ और बाद में उन्होंने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) कानपुर से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। इसके बाद, उन्होंने प्रिंसटन विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। स्ट्रिंग थ्योरी और ब्लैक होल्स पर उनके शोध ने विज्ञान के इन क्षेत्रों में नई दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं।

डॉ.दाभोलकर का प्रमुख कार्य यह दर्शाता है कि ब्लैक होल्स की आंतरिक संरचना और क्वांटम यांत्रिकी के सिद्धांतों को एक साथ कैसे समझा जा सकता है। वे भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रेरणादायक व्यक्तित्व हैं और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत का नाम ऊंचा कर चुके हैं। उन्होंने अपने जीवनकाल में कई वैज्ञानिक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त किए हैं और वैश्विक मंच पर विज्ञान के क्षेत्र में नेतृत्व करने के लिए पहचाने जाते हैं।

मानद उपाधि की श्रृंखला में ही प्रसिद्ध भौतिक वैज्ञानिक एवं पदार्थ विज्ञान के विशेषज्ञ डॉ. जतिंदर वीर यख्मी को नैनो टेक्नोलॉजी, नैनो सामग्री और ऊर्जा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदानों के लिए डॉक्टर ऑफ़ साइंस की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया।

डॉ.जतिंदर वीर यख्मी जो भौतिकी और पदार्थ विज्ञान (मैटेरियल साइंस) के क्षेत्र में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए जाने जाते हैं। उनका शोध मुख्य रूप से नैनो टेक्नोलॉजी, नैनो सामग्री और ऊर्जा से संबंधित विषयों पर केंद्रित है। उन्होंने भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (BARC), मुंबई में एक वरिष्ठ वैज्ञानिक के रूप में कार्य किया है और विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

डॉ.यख्मी ने नैनो-सामग्री और नैनो-कणों के विकास के क्षेत्र में नए आयाम जोड़े हैं, जिनका उपयोग ऊर्जा उत्पादन, स्टोरेज और पर्यावरणीय अनुप्रयोगों में किया जाता है। उनके शोध का एक महत्वपूर्ण हिस्सा ऊर्जा के नवकरणीय स्रोतों को अधिक प्रभावी और सुलभ बनाने के तरीकों को विकसित करना रहा है।

इसके अलावा, डॉ. जतिंदर वीर यख्मी ने वैज्ञानिक लेखन के क्षेत्र में भी योगदान दिया है और उन्होंने कई प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में अपने शोध पत्र प्रकाशित किए हैं। वे कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलनों में अपने शोध का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं और अपने विषय में एक अग्रणी विशेषज्ञ माने जाते हैं। डॉ.यख्मी विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में युवाओं को प्रेरित करने और उन्हें नवाचार की दिशा में अग्रसर करने के लिए भी जाने जाते हैं।

इस मौके पर माननीय राज्यपाल महोदय द्वारा विभिन्न संकायों के अलग-अलग पाठ्यक्रमों में सर्वोच्च प्रदर्शन करने वाले 27 प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को राजा भोज उत्कृष्टता पदक प्रदान किए गए। साथ ही माननीय कुलाधिपति महोदय की गरिमामयी उपस्थिति में स्नातक एवम स्नातकोत्तर के सभी संकायों के ऊर्जावान उत्तीर्ण विद्यार्थियों को उपाधि प्रदान की गई। जिसमे स्नातक के 162 एवम स्नातकोत्तर के 169 से अधिक विद्यार्थियों ने डिग्री प्राप्त की।

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के इस सप्तम दीक्षांत समारोह में विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलगुरू, कुलसचिव एवं अन्य वरिष्ठ जन भी उपस्थित रहे। इस अवसर पर मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. संजय तिवारी ने विद्यार्थियों को शपथ दिलाई और प्रेरणादायक उद्बोधन देते हुए कहा कि, मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू करने वाला देश का अग्रणी मुक्त विश्वविद्यालय है। उन्होंने कहा कि, सिकल सेल एनीमिया के निवारण हेतु विश्वविद्यालय ने धार जिला के पांच गांवों को गोद लिया है।

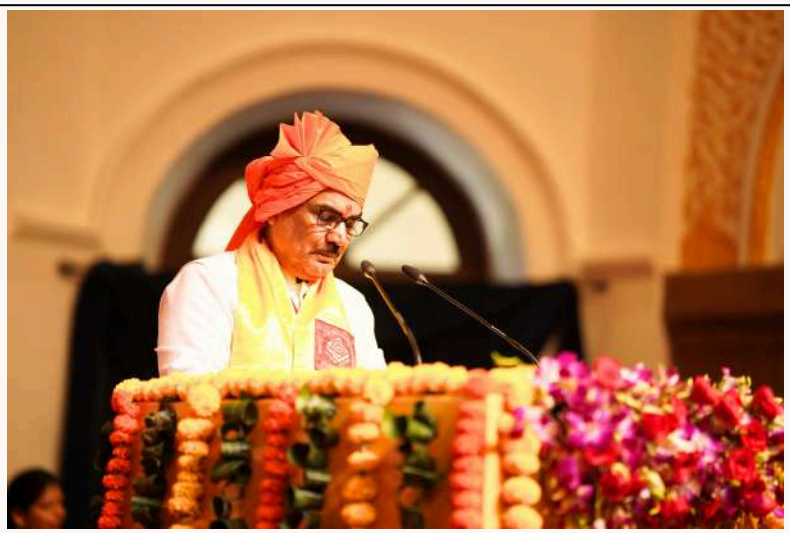

डॉ. तिवारी ने बताया कि, विश्वविद्यालय में 50 से ज्यादा पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। जिममें विशेष रूप से विज्ञान पर आधारित विभिन्न प्रकार के कोर्स जैसे साइबर सिक्योरिटी, डाटा साइंसेज लॉजिस्टिक मैनेजमेंट, एनर्जी मैनेजमेंट के साथ-साथ मूल्य बोध कराने वाले पाठ्यक्रम रामचरितमानस में डिप्लोमा और गीता में डिप्लोमा शामिल है। यह पाठ्यक्रम डिस्टेंस एजुकेशन ब्यूरो यूजीसी, एआईसीटीई, रिहैब्लिटेशन काउंसिल आफ इंडिया और एनसीटीई से मान्यता प्राप्त है।

डॉ. तिवारी ने कहा कि, विभिन्न रोजगार परक कार्यक्रम विश्वविद्यालय में तैयार किए गए हैं। जिनसे छात्रों को जीविका उपार्जन करने में सहायता होगी। उन्होंने कहा कि, विश्वविद्यालय ने लगभग 5.5 लाख विद्यार्थियों का एबीसी पहचान खाते बनवाए हैं। उन्होंने कहा कि, विश्वविद्यालय शीघ्र ही मध्य प्रदेश की पहली डिजिटल यूनिवर्सिटी बनने जा रही है। इससे संबंधित प्रस्ताव विश्वविद्यालय ने शासन के समक्ष प्रस्तुत कर दिया है। उन्होंने विद्यार्थियों का आवाहन करते हुए कहा कि, आप विश्वविद्यालय के दूत हैं। आप जहां भी रहें अपने परिवार, अपने समाज, अपनी संस्था और राष्ट्र की कीर्ति बढ़ाएं।

उच्च शिक्षा मंत्री इंदर सिंह परमार ने कहा कि, मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय ने आज अपने दीक्षांत समारोह में बहुत बड़ी-बड़ी हस्तियों को मानद उपाधि प्रदान की है। इससे इन हस्तियों के माध्यम से मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय की ख्याति और बढ़ेगी। उन्होंने राजा भोज को याद करते हुए कहा कि राजा भोज ने जल संरक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया जिसका प्रमाण यह है कि उन्होंने भोपाल में एक बड़े तालाब का निर्माण करवाया था। जो आज भी मौजूद है। राजा भोज कई ग्रंथों के रचयिता हैं। उन्होंने धार में संस्कृत का एक विश्वविद्यालय स्थापित किया जिसे भोजशाला के नाम से जाना जाता है। जिसमें देश ही नहीं विदेशों से भी विद्यार्थी संस्कृत की शिक्षा ग्रहण करने आते थे। उन्होंने उच्च शिक्षा विभाग के संदर्भ में कहा कि, मध्य प्रदेश भारतीय ज्ञान परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए तेजी से कार्य कर रहा है।

विश्वविद्यालय के स्नातक युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि, भारत में कृतज्ञता की परंपरा रही है जिससे हमें कुछ मिलता है हमें उसके प्रति कृतज्ञ रहना चाहिए, इसका भाव हमारी संस्कृति में मिलता है। इस संदर्भ में उन्होंने तीन उदाहरण देते हुए कहा वृक्षों से हमें प्राणवायु मिलती है और भारतीय संस्कृति में वृक्षों की पूजा की जाती है। दूसरा उदाहरण उन्होंने जल से संबंधित दिया उन्होंने कहा है कि, जलप्रदाय करने वाली नदियां, तालाब ,पोखर आदि बहुत महत्वपूर्ण है और हमारी संस्कृति में इन सब जल स्रोतों की पूजा करने की परंपरा पाई जाती है। तीसरा उदाहरण उन्होंने सूर्य का दिया उन्होंने कहा कि, सूर्य ही पृथ्वी पर समस्त ऊर्जा का स्रोत है और इस ऊर्जा के स्रोत के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए भारतीय संस्कृति में सूर्य की पूजा का विधान है। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि, इस कृतज्ञता के भाव को हमें समाज में लाना होगा।

उन्होंने विद्यार्थियों, शिक्षकों और शिक्षा प्रशासकों का आवाहन करते हुए कहा कि, राष्ट्रीय शिक्षा नीति में हमें इस अभियान को मूर्त रूप देने में एक साथ मिलकर कार्य करना होगा। हमें एक साथ मिलकर भारत को विश्व गुरु और विकसित भारत बनाने की दिशा में कार्य करना होगा।

प्रख्यात परमाणु वैज्ञानिक डॉ अनिल काकोडकर ने विश्वविद्यालय के पुराने समय को याद करते हुए कहा कि, एक समय में विश्व प्रसिद्ध चेन्नई मैथमेटिकल इंस्टीट्यूट के विद्यार्थी यहां से डिग्री प्राप्त किया करते थे। उन्होंने कहा कि, पूरी दुनिया आपके लिए चुनौतियां और अवसरों से भरी पड़ी है। आपके सभी सपने पूरे हों ऐसी कामना करते हैं। उन्होंने कहा कि, आपका अभिभावकों के कई वर्षों की कड़ी मेहनत और पालन का नतीजा आप आज पा रहे हैं। उन्होंने कहा कि, भारत अधिक जनसंख्या वाला देश है और विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। इसके बावजूद उन्होंने इस बात पर दुख व्यक्त किया कि, हमारे प्रति व्यक्ति आय विश्व के कई देशों के मुकाबले बहुत कम है। हमारे जीवन शैली विकसित देशों के बराबर करने के लिए हमारे प्रति व्यक्ति आय को वर्तमान से लगभग 7 गुना करना होगा।

उन्होंने कहा कि, शिक्षा व्यवस्था में हमें ग्रामीण परिवेश और शहरी परिवेश की संसाधनों की उपलब्धता और शिक्षा की पहुंच की जो बहुत बड़ी खाई है। इसको पाटने की जरूरत है। डॉ. काकोडकर ने कहा कि, हमें युवाओं को तकनीक आधारित ज्ञान देकर उन्हें तकनीकी सामान बनाने हेतु कौशल विकसित करने में सक्षम बनाना होगा। उन्होंने कहा कि, नए स्नातकों को अच्छा मानव बन के दिखाना होगा। अच्छे संस्कार और ज्ञान से परिपूर्ण बनना होगा। उन्होंने शोध पर बहुत अधिक बल देते हुए कहा कि, ज्ञान की नई-नई सीमाएं तभी पार की जा सकती है, जब हम अपनी शिक्षा व्यवस्था को शोधपरख और मूल्यवान बनाएं। तकनीक को मूल्यवान तकनीक में बदलना बहुत आवश्यक है। उन्होंने आज के नए शोधार्थियों से आवाहन करते हुए कहा कि, हमें विज्ञान और तकनीक का उपयोग समाज की समस्याओं को कैसे हल किया जाए। इसके लिए मिलकर शोध करना होगा और उन समस्याओं का समाधान खोजना होगा। आज की आधुनिक दुनिया में केवल ज्ञान प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसके उपयोग को समाज और देश के कल्याण में लाना आवश्यक है। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा की कठोर श्रम का कोई पर्याय नहीं है। कठोर परिश्रम ही आपके सपनों को पूर्ण करने का मार्ग प्रशस्त करेगा देश के संदर्भ में डॉ. काकोडकर ने कहा कि, ज्ञान से हमें आत्मनिर्भरता आएगी। जैसा कि भारत ने पहले कर दिखाया है। उन्होंने बताया कि, नाभिकीय ऊर्जा के क्षेत्र में भारत ने विश्व के प्रतिबंधों के बावजूद अपनी नाभिकीय क्षमताओं को ऊर्जा जरूरत को हासिल करके दिखाया है और यह प्रदर्शित करता है कि, हमारे विश्वविद्यालय में किस प्रकार वैज्ञानिक शोध के लिए माहौल रहा है। विद्यार्थियों से कहा कि, आप मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के दूत हैं और आप इसका नाम अपने समाज ,देश और विश्व में फैलाएंगे । बेहतर विश्व बनाने में आपकी भूमिका महत्वपूर्ण होगी।

भौतिक वैज्ञानिक डॉ. आतिश दाभोलकर वर्चुअल माध्यम से इटली से जुड़े उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि, शिक्षा न केवल व्यक्ति के लिए बल्कि समाज के लिए बहुत ही आवश्यक है। उन्होंने कहा कि, वह अपने संस्थान में विज्ञान को मुक्त रूप से बढ़ावा देते हैं। हमारे संस्थान में कई विषयों में वैज्ञानिक शोध किया जा रहा है। हमारे संस्थान से 10,000 से अधिक वैज्ञानिक सहभागिता कर रहे हैं और शोध को आगे बढ़ा रहे हैं। उन्होंने सभी डिग्री धारी को बधाई देते हुए कहा कि, मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के यह नए स्नातक मानवीय मूल्य और भारतीय दर्शन को समस्त विश्व में फैलाएंगे ऐसी आशा करते हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए राज्यपाल मध्य प्रदेश शासन एवं कुलाधिपति मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय श्री मंगू भाई पटेल ने कहा कि, मैं आज सभी विद्यार्थी जिन्होंने अपनी डिग्री और मेडल पाए हैं उनको बधाई देता हूं। उन्होंने विशेष रूप से उनके शिक्षकों और माता-पिता को बधाई दी उन्होंने कहा कि, मां-बाप ने बड़ी कठिनाइयों से आपका पालन पोषण किया है। गुरु ने बड़े मन से आपको सिखाया है। इनको आपको हमेशा याद रखना है। उन्होंने यह भी कहा कि, जिन महान विभूतियां को आज मानद उपाधि प्राप्त हुई है, आज उनके माता-पिता और गुरु भी गौरवान्वित हुए होंगे। उन्होंने कहा कि, दूरस्थ शिक्षा पद्धति जीविका उपार्जन के साथ-साथ जीवन पर्यंत शिक्षा प्राप्त करने का प्रमुख साधन है। मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के कुलपति ने पांच गांव में शासन की योजनाओं को लाभ दिलाने का संकल्प लिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सफलता के लिए दूरस्थ शिक्षा पद्धति के स्वरूप को गरीब और वंचित लोगों पर केंद्रित करना होगा। हमें विद्यार्थियों को ज्ञान और कौशल उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा चलाए गए जा रहे रामचरितमानस और गीता पर आधारित पाठ्यक्रमों की सराहना करते हुए कहा कि, यह पाठ्यक्रम समाज में नैतिक शिक्षा फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। उन्होंने विद्यार्थियों को विशेष रूप से कहा कि, आपको अपने मां-बाप को नहीं भूलना है और ऐसा कोई कार्य नहीं करना है, जिससे आपको अपनी मातृभूमि को नुकसान हो।

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के सप्तम दीक्षांत समारोह कार्यक्रम में डॉ रतन सूर्यवशी ने उद्घोषक के रूप में मंच संभाला । दीक्षांत कार्यक्रम का मंच संचालन विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ सुशील मंडेरिया द्वारा किया गया ।

12 राजधानी

नईदुनिया

भोपाल, 2 अक्टूबर 2024

आजीवन शिक्षा पाने का महत्वपूर्ण साधन है दूरस्थ शिक्षा पद्धति

राजा भोज मुक्त विश्वविद्यालय के सातवें दीक्षांत समारोह में राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने प्रख्यात विभूतियों को प्रदान कीं मानद उपाधियां

रामचरित मानस और गीता में डिप्लोमा देने की पहल सराहनीय

प्रख्यात विभूतियां मानद उपाधि से सम्मानित

कार्यक्रम के अंत में आभार प्रदर्शन विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. सुशील मांडेरिया द्वारा किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के समस्त अधिकारी शिक्षक एवं कर्मचारी गण उपस्थित रहे साथ ही कार्यक्रम में भारी संख्या में विद्यार्थी एवं उनके परिजनों ने शिरकत की।

नवदुनिया

नई सोच, नया अंदाज

भोपाल, बुधवार 02 अक्टूबर, 2024

www.naidunia.com

सुरक्षा परिषद में भारत को जगह देने का अभियान बढ़ा आगे 10 | सरकार ने शुरू की पीएम ई-ड्राइव सब्सिडी योजना 11

आजीवन शिक्षा पाने का महत्वपूर्ण साधन है दूरस्थ शिक्षा पद्धति

समारोह ● भोज विवि के दीक्षा समारोह में छह मानद उपाधि और 27 विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक प्रदान किया गया

नवदुनिया प्रतिनिधि, भोपाल: वैश्विक प्रतिस्पर्धा में दूरस्थ शिक्षा जीविकोपार्जन के साथ आजीवन शिक्षा पाने का एक महत्वपूर्ण साधन है। समाज के अत्यंत पिछड़े, दूरस्थ क्षेत्रों, दिव्यांगजन, घरेलू व कामकाजी स्त्री-पुरुष और युवाओं तक शिक्षा पहुंचाने का यह सहज और सरल माध्यम है। यह बात राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने मंगलवार को कुशाभाऊ ठाकरे अंतरराष्ट्रीय सभागार में आयोजित भोज विश्वविद्यालय के सातवें दीक्षा समारोह के दौरान कही। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी भी अपने माता-पिता और गुरुजनों के योगदान को कभी नहीं भूलें।

उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा रामचरित मानस से सामाजिक विकास एवं भगवत गीता में डिप्लोमा और सिकल सेल एनीमिया जागरूकता के लिए ग्रामीण अंचलों में किए जा रहे उन्मुखीकरण प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि तेजी से बदलती दुनिया में उच्च मानकों के पाठ्यक्रमों के साथ विश्वविद्यालय विषय विशेषज्ञों द्वारा गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री तैयार कराएं। कौशल उन्नयन और भविष्य की जरूरतों के अनुसार, अपने कार्यक्रमों को डिजाइन करें। विद्यार्थियों को ज्ञान एवं कौशल के सहज आदान-प्रदान का प्लेटफार्म भी उपलब्ध कराएं।

उच्च शिक्षा मंत्री इंदर सिंह परमार ने विद्यार्थियों से कहा कि वे राजा भोज के व्यक्तित्व व कृतित्व से प्रेरणा लें। भारतीय दर्शन, गौरवशाली ज्ञान परंपरा और पर्यावरण संरक्षण के कार्यों में सहयोग कर विकसित भारत के निर्माण में सहभागी बनें। स्वागत उद्बोधन कुलगुरु प्रो. डा. संजय तिवारी ने दिया। आभार कुलसचिव डा. सुशील मंडेरिया ने माना। समारोह में परमाणु विज्ञानी पद्म विभूषण डा. अनिल काकोडकर, विज्ञानी व शिक्षाविद पद्मश्री डा. अशोक झुनझुनवाला, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विवि के पूर्व कुलगुरु डा. नागेश्वर राव, विज्ञानी डा. जॉर्ज वीर याखमी, चिकित्सा विशेषज्ञ डा. ओम प्रकाश शर्मा, भारतीय सैद्धांतिक भौतिक विज्ञानी डा. अतिश दाभोलकर को मानद उपाधि प्रदान की गई। 27 विद्यार्थियों को राजा भोज उत्कृष्टता पदक प्रदान किया गया।

भोज मुक्त विश्वविद्यालय के दीक्षा समारोह में राज्यपाल मंगुभाई पटेल द्वारा प्रदान की गई उपाधि दिखाती छात्राएं। • नवदुनिया

कुशाभाऊ ठाकरे अंतरराष्ट्रीय सभागार में आयोजित भोज मुक्त विश्वविद्यालय के दीक्षा समारोह में उपाधियां और गोल्ड मेडल प्रदान करते राज्यपाल मंगुभाई पटेल। • नवदुनिया

प्रशासनिक अधिकारी बनने का सपना है

खरगोन से पढ़ाई कर रही पूजा चौधरी को एमए राजनीति विज्ञान के लिए स्वर्ण पदक मिला है। वे आगे प्रशासनिक अधिकारी बनना चाहती है।

पूजा चौधरी

आगे पीएचडी करना है

बड़वाह में रहकर पढ़ाई करने वाली छात्रा रेणुका सावले को एमए हिंदी साहित्य के लिए स्वर्ण पदक मिला है। उन्होंने कहा कि मुक्त विवि से पढ़ाई करना आसान है। आगे पीएचडी करना चाहती है।

रेणुका सावले

परमाणु ऊर्जा में अधिक सक्षम है भारत अब तकनीक में आत्मनिर्भरता की बारी

भोज विवि के दीक्षा समारोह में मानद उपाधि से सम्मानित हुई ये विभूतियां

अंजली राय • नवदुनिया

भोपाल: ये सच है कि परमाणु ऊर्जा में जो लक्ष्य हमें हासिल करना था, वह हम नहीं कर पाए। उस कार्यक्रम में देरी हुई, जिसके कई कारण रहे हैं। कई प्रतिबंध रहे हैं। किसी जमाने में परमाणु ऊर्जा से जुड़ी तकनीक हमें कोई नहीं देता था। यह भारत के लिए बड़ी चुनौती रही है, लेकिन हमने वह क्षमता विकसित कर ली। दूसरी चुनौती थी कि यूरेनियम का मिलना। अब उसकी व्यवस्था हो गई है। तीसरी चुनौती थी परमाणु रिएक्टरों की स्थापना, अब इस कार्यक्रम ने भी रफ्तार पकड़ी है। यह बातें पद्म विभूषण से सम्मानित परमाणु विज्ञानी डा. अनिल काकोडकर ने नवदुनिया से विशेष बातचीत में कही। देश की ऊर्जा जरूरतों पर बात करते हुए डा. काकोडकर ने कहा कि हमारा लक्ष्य विकसित भारत है। यानी हम देश के लोगों का जीवन स्तर विकसित देशों के लोगों के जीवन स्तर के बराबर करना चाहते हैं। यह हासिल करने के लिए ऊर्जा का उत्पादन बढ़ाना होगा, क्योंकि कल-कारखाने और दैनिक सुविधाएं बिजली पर निर्भर है।

डा. अनिल काकोडकर

जल्दी बूढ़ा बना रही है बदलती जीवनशैली

वरिष्ठ वृद्ध चिकित्सा विशेषज्ञ डा. ओम प्रकाश शर्मा ने कहा कि विश्व में वृद्ध लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। भारत की कुल आबादी में नौ प्रतिशत लोग वृद्ध हो चुके हैं। अब तक यह माना जाता है कि वृद्धावस्था में कुछ नहीं हो सकता है, लेकिन वृद्धावस्था में बचाव और वैक्सीन लगाकर कई बीमारियों से बचा जा सकता है। एन्फ्लुएंजा, निमोनिया, टिटनेस का वैक्सीन जरूर लगवाएं। वृद्धावस्था शुरू होने से पहले ही अपने वजन, कैलोरी पर नियंत्रण और नियमित एक्सरसाइज कर लिया तो बुढ़ापा परेशान नहीं करेगा। सबसे ज्यादा जरूरी सकारात्मक सोच के साथ खुश रहना है। युवाओं की बदलती लाइफ स्टाइल को उन्होंने जल्द बुढ़ापा आने का कारण बताया। उनका कहना है कि देर तक जागने से दिमाग के अंदर मेलाटोनिन की कमी होने लगती है, जिससे याददाश्त कमजोर होती है। सुबह जल्दी उठना और जल्दी सोना अच्छा माना गया है।

डा. ओम प्रकाश शर्मा

एआइ इंसानी दिमाग को रिप्लेस नहीं कर सकता

विज्ञानी व शिक्षाविद पद्मश्री डा. अशोक झुनझुनवाला ने कहा कि जब कंप्यूटर आया था, तब भी माना जा रहा था कि रोजगार खत्म कर देगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इसी तरह अब आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआइ) के आने से कहा जा रहा है कि यह इंसान को रिप्लेस कर रोजगार खत्म कर देगा, लेकिन ऐसा नहीं है। जब तक इनका नियंत्रण हमारे हाथ में रहेगा, तब तक कभी भी ये इंसान के दिमाग से तेज नहीं चल सकते हैं। इसके लिए हमें तकनीक को आसानी से अपनाना होगा। अगर हम तकनीकी रूप से दक्ष हो जाएंगे तो हमारा कोई कुछ नहीं कर सकता है। भारत तकनीक का उपयोग कर रहा है, लेकिन उसे बना नहीं रहा है। अब भारत को खुद तकनीक बनाना होगा। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी तकनीक का नेटवर्क फैल रहा है। युवा वर्ग बहुत सक्षम है। उन्हें मौका देना होगा कि वे तकनीक का निर्माण करें।

डा. अशोक झुनझुनवाला

▶ भोज विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में 27 विद्यार्थियों को मिला उत्कृष्टता पदक, यूजी-पीजी के 331 को उपाधि

माता-पिता और गुरुजनों के योगदान और तपस्या के प्रति कृतज्ञता का भाव रखें : राज्यपाल पटेल

भोपाल (आरएनएन)। वैश्विक प्रतिस्पर्धा में दूरस्थ शिक्षा, जीविका उपार्जन के साथ आजीवन शिक्षा पाने का एक महत्वपूर्ण साधन है। समाज के अत्यंत पिछड़े, दूरस्थ क्षेत्रों, दिव्यांगजन, घरेलू कामकाजी स्त्री-पुरुष और युवाओं तक शिक्षा पहुंचाने का यह सहज और सरल माध्यम है। यह बात राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने मंगलवार को राजा भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के सातवें दीक्षांत समारोह में कही। उन्होंने कहा कि दीक्षित विद्यार्थी, अपने माता-पिता और गुरुजनों के योगदान, उनके त्याग और तपस्या के प्रति कृतज्ञता का भाव रखें। कुशाभाऊ ठाकरे अंतर्राष्ट्रीय सभागार में हुए इस समारोह में उच्च शिक्षा, आयुष एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री इंदर सिंह परमार भी मौजूद थे।

राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के सातम दीक्षांत समारोह में पद्म विभूषण डॉ. अनिल काकोड़कर सहित प्रख्यात विभूतियों को डी. एससी. और डी. लिट. की मानद उपाधियों से सम्मानित किया।

राजा भोज के व्यक्तित्व से लें प्रेरणा : इस अवसर पर मंत्री परमार ने अपने संबोधन में विद्वान और प्रतापी राजा भोज के शिक्षा प्रसार जल संरक्षण और प्रजाहितैषी कार्यों का जिक्र किया। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि वे राजा भोज के व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रेरणा लें। भारतीय दर्शन, गौरवशाली ज्ञान परंपरा और पर्यावरण संरक्षण के कार्यों में सहयोग कर विकसित भारत के निर्माण में सहभागी बनें। कार्यक्रम को डॉ. होमी जहांगीर भाभा इंस्टीट्यूट के चान्सलर पद्मविभूषण डॉ. अनिल काकोड़कर और भौतिक विज्ञानी डॉ. आतिश श्रीपाद दाभोलकर ने भी संबोधित किया। स्वागत उद्बोधन कुलगुरू प्रो. संजय तिवारी ने दिया। कुलसचिव डॉ. सुशील मंडेरिया ने दीक्षांत की कार्यवाही का संचालन और आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर अतिथियों ने विवि की स्मारिका का लोकार्पण किया। समारोह में वरिष्ठ अधिकारी, विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलगुरु, भोज विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों के अध्यक्ष, दीक्षित विद्यार्थी और उनके अभिभावक भी मौजूद रहे।

प्रख्यात विभूतियां मानद उपाधि से सम्मानित: इस अवसर पर पद्मविभूषण डॉ. अनिल काकोड़कर, डॉ. आतिश श्रीपाद दाभोलकर, बीएआरसी के डॉ. जेव्ही याख्मी, आईआईटी चेन्नई के प्रोफेसर पद्मश्री डॉ. अशोक झुनझुनवाला और डॉ. ओमप्रकाश शर्मा को डॉक्टर ऑफ साइन्स (डीएससी) की मानद उपाधि से सम्मानित किया। वहीं पूर्व कुलपति इग्नू प्रो. नागेश्वर राव को डॉक्टर ऑफ डिस्टेंस एजुकेशन की मानद उपाधि प्रदान की गई। कार्यक्रम में विभिन्न संकायों के पाठ्यक्रमों में सर्वोच्च प्रदर्शन करने वाले 27 विद्यार्थियों को उत्कृष्टता पदक दिए गए। वहीं यूजी-पीजी के करीब 331 विद्यार्थियों को उपाधि प्रदान की गई।

प्रोटोकाल का पालन करना भूला विवि: दीक्षांत समारोह में उपाधियां दिए जाने के बाद अफरा-तफरी का माहौल बन गया। राज्यपाल और अतिथियों के साथ फोटो खिंचवाने के लिए बड़ी संख्या में दीक्षित विद्यार्थी मंच के पास एकत्रित हो गए। जिसके कारण वहां भीड़ लग गई और हलचल की स्थिति बन गई। इस आपाधापी में विवि प्रबंधन शोभायात्रा की वापसी के प्रोटाकॉल का पालन करना ही भूल गया। शोभायात्रा की वापसी में राज्यपाल, मंत्री व अन्य लोगों के शामिल होने की प्रक्रिया को फॉलो नहीं किया। वहीं समापन के समय भोजन और अन्य अव्यवस्थाओं को लेकर भी लोगों में नाराजगी दिखी।